चित्रःगूगल से साभार

सरहदें

रिश्ता मोहब्बत का अब बहुत ही ज़लील हो चुका है।
क्योंकि दिलों में फासला अब गज नहीं मील हो चुका है।

तुम भी बेख़ौफ़ हो कर अब दे सकते हो दर्द मुझे,
पहले ज़िगर झरना था मेरा,अब झील हो चुका है।

सारी दलीलें जज को ही देनी पड़ रही है अदालतों में,
क्योंकि वकील जज और जज वकील हो चुका है।

मां की पेंशन,बाप की ज़ायदाद का कितना ख्याल रखता है,
आज का बेटा कितना विद्वान कितना सुशील हो चुका है ।

लोग अब घरों में ही सरहदें बना कर बैठे हैं भट्टी,
एक घर अब कई घरों में तबदील हो चुका है ।

रिश्ता मोहब्ब्त का अब बहुत ही ज़लील हो चुका है,
क्योंकि दिलों में फासला अब गज नहीं मील हो चुका है।

शायर भट्टी